विशद

लक्ष्मी प्राप्ति विधान

समवशरण अर्चना

मण्डल

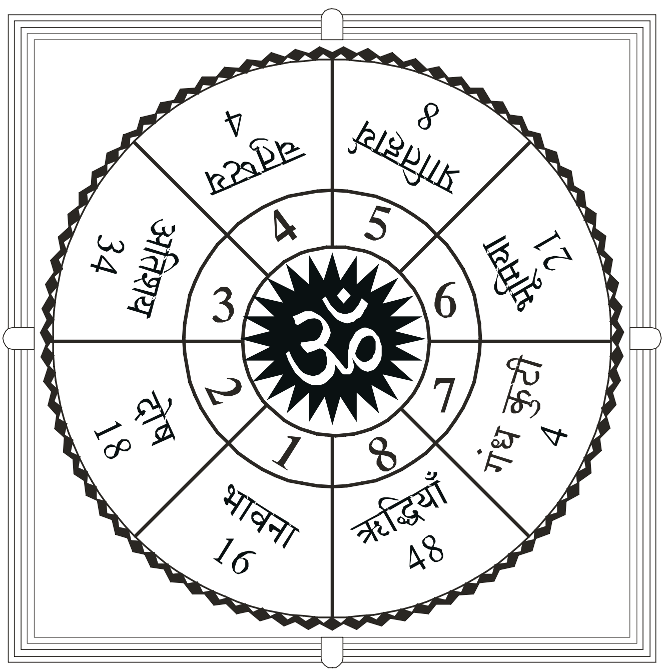

रचयिता :

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज

प्रकाशक

विशद साहित्य केन्द्र

कृति : **विशद लक्ष्मी प्राप्ति विधान**

कृतिकार : **प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज**

संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागर जी महाराज

सहयोगी : आर्यिका भक्तिभारती माताजी, ऐलक विदक्षसागर,
क्षु. श्री 105 विसोमसागर जी महाराज, क्षु. वात्सल्यभारती माताजी

संपादन : ब्र.ज्योति दीदी (9829076085), ब्र.आस्था दीदी (9660996425)
ब्र. सपना दीदी (9829127533), ब्र. आरती दीदी

संस्करण : प्रथम 2016 (1000 प्रतियाँ)

मूल्य : 21/- (पुनः प्रकाशन हेतु)

सम्पर्क सूत्र : (1) **श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर**
नेमिनगर, बस स्टैण्ड के पास, नैनवा,
जिला-बूँदी (राज.) मो. 982033357

(2) **विशद साहित्य केन्द्र**
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर कुआँ वाल जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा), मो. 9812502062

(3) **हरीश जैन**
3/77-राम गली, विश्वास नगर, दिल्ली
मो. 9213188371, 9136248971

(4) **सुरेश जैन**
पी-958, गली नं. 3, शान्ति नगर, दुर्गापुरा, जयपुर
मो. 9413336017

पुण्यार्जक : पूज्य पिताजी व माताजी स्व. श्री मातराम जैन एवं स्व. श्रीमती इमरती देवी जैन, रोहतक वाले की पुण्य स्मृति में सपरिवार द्वारा प्रकाशित।
श्री नरेन्द्र जैन दीपक जैन अक्षत जैन सुनीता जैन योगिता जैन
म.नं. 517, सेक्टर-4, गुरुग्राम (हरियाणा)

e-mail : vishadsagar11@gmail.com

प्रकाशक: **विशद साहित्य केन्द्र**

मुद्रक : **पिक्सल 2 प्रिंट, जयपुर,** हेमन्त जैन (बड़ागाँव) मो. 9509529502

लक्ष्मी स्तोत्र

लक्ष्मीर्महातुल्य सती सती सती, प्रबल कालो विरतो रतो रतो।
जरा रुजा जन्म हता हता हता, पार्श्व फणे राम गिरौ गिरौ गिरौ।।1।।
अचैर्यमाद्यं सुमना मना मना, यः सर्वदेशे भुवना बिना बिना।
समस्त विज्ञान भयो भयो भयो, पार्श्व फणे राम गिरौ गिरौ गिरौ।।2।।
व्यनष्ट जतो शरणं रणं रणं, क्षमादितोयः कमठं मठं मठं।
नरामरा रामक्रमं क्रमं क्रमं, पार्श्व फणे राम गिरौ गिरौ गिरौ।।3।।
अज्ञान सत्काम लता लता लता, यदीय सद्भाव नता नता नता।
निर्वाण सौख्यं सुगता गता गता, पार्श्व फणे राम गिरौ गिरौ गिरौ।।4।।
विवादिता शेष विधि विधि विधिर्, वभृवसर्पावहरी हरि हरि।
त्रिज्ञान सद्ज्ञान हरो हरो हरो, पार्श्व फणे राम गिरौ गिरौ गिरौ।।5।।
यद्विश्वलौकेक गुरुं गुरुं गुरुं, विराजतो येन वरं वरं वरं।
तमाल निलागं भरं भरं भरं, पार्श्व फणे राम गिरौ गिरौ गिरौ।।6।।
सरंक्षतो दिग्भुवन वनं वनं वनं, विराजता येषु दिवै दिवै दिवै।
पादद्वये नून सुरा सुरा सुरा, पार्श्व फणे राम गिरौ गिरौ गिरौ।।7।।
कराज्यनित्य सकला कला कला, ममार तृष्णो बृजिनो जिनो जिनो।
संहार पूज्य वृषा सभा सभा सभा, पार्श्व फणे राम गिरौ गिरौ गिरौ।।8।।

(सार्दूलविक्रीडित छन्द)

तर्क्के व्याकरण च नाटक च ये, काव्यकुले कौशले,
विख्याती मुनि पद्मनन्दि मुनयः तत्मस्य कोपनिधिः।
गम्भीरं–यमकाष्टकं भणति स यः संभूय सा लभ्यते,
श्रीमदपद्मप्रभस्य निर्मितमिदं स्तोत्रं जगन्मंगलं।।9।।

।। इति श्री लक्ष्मी स्तोत्रम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै मम् सर्व सिद्धिं कुरु–कुरु स्वाहा।

(लक्ष्मी–प्राप्ति का मंत्र)

जाप्य : **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं श्री महालक्ष्मै नमः स्वाहा।**

लक्ष्मी बीज श्रीं विद्या स्तोत्र

(ज्ञानोदय छन्द)

श्रीं मंत्र का जाप करे जो, वह हो जाए सूर्य समान।
स्वर्ग लक्ष्मी पाए अन्य भी, चन्द्र किरण सम पाए महान।।
श्रीं विद्या दारिद की नाशी, तोड़े जो शत्रू का माथ।
घर में धन की धार बहाए, लक्ष्मी बरसे उसके हाथ।।
श्मशान मंदिर जंगल अथवा, हो कोई निर्जन स्थान।
जहाँ कहीं स्थित हो मानव, हो कुबेर सम वह धनवान।।
दश अक्षर आठ अक्षर ग्यारह, अक्षर का लक्ष्मी यह मंत्र।
इसका ध्यान जाप करता है, होके मानव स्वयं स्वतंत्र।।
सर्व फलों को पाकर के ज्यों, कृष्ण हुए संतुष्ट महान।
मंत्री श्रेष्ठ मार्गगामी हो, अहोरात्रि जो करता ध्यान।।
ॐ ह्रीं को आदि में लेकर अन्त में नमः लगाकर जाप।
श्वेत पीत अरु कृष्ण लाल रंग, में ध्याएँ कटते हैं पाप।।
धन के इच्छुक स्वर्ण पट्ट पर, मंत्र का लेखन करके आप।
मंत्र ग्रहण कर गुरु से प्रतिदिन, कर स्नान करें शुभ जाप।।
ॐ ह्रीं सरस्वत्यै नमः यह, मंत्र जाप करना।
मंत्र कार्य सिद्धि कारक इस, गगन और भू पर मनहार।।
नहीं मंत्र दूजा है कोई, अतः मोक्ष के इच्छावान।
एक लाख जप करो भाव से, पाओगे निश्चित निर्वाण।।
अधिक कहें क्या विद्वत जन या, चतुर लोग जो रहे महान।
हो प्रसन्न इस मंत्र का प्रतिदिन, 'विशद' जाप और करना ध्यान।।

***

श्री लक्ष्मी पूजा

स्थापना

अन्तर बाह्य लक्ष्मी धारी, होते तीर्थंकर भगवान।
भक्त शरण में आकर करते, जिनका भाव सहित गुणगान।।
निष्कांक्षित भक्ती कर श्रावक, पा लेते हैं पुण्य निधान।
समवशरण में प्राणी जावें, पावें जीव किमिच्छित दान।।

दोहा– श्रीधर श्री वर आप हो, तीर्थंकर भगवान।
श्री पाने निज हृदय में, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्री उभय लक्ष्मी प्रदायक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्री उभय लक्ष्मी प्रदायक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्री उभय लक्ष्मी प्रदायक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छन्द)

सागर के जल से धोकर भी, यह मन निर्मल ना होता है।
शुभ भक्ति अर्चना का जल सिंचन, बीज सुखों का बोता है।।
जिन अर्चा कर जग के प्राणी, अतिशय लक्ष्मी शुभ पाते हैं।
हम श्री जिनेन्द्र के चरण कमल, में सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्री उभय लक्ष्मी प्रदायक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

जलते हैं क्रोधादिक से हम, निज क्षमा धर्म को खोते हैं।
कर्मोदय आता जीवन में, भवताप प्राप्त कर रोते हैं।।
जिन अर्चा कर जग के प्राणी, अतिशय लक्ष्मी शुभ पाते हैं।
हम श्री जिनेन्द्र के चरण कमल, में सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्री उभय लक्ष्मी प्रदायक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

स्थिरता भक्ती में आए, चंचलता दुख का कारण है।
अक्षत से अक्षय जिन पूजा, दुख का ये श्रेष्ठ निवारण है।।

जिन अर्चा कर जग के प्राणी, अतिशय लक्ष्मी शुभ पाते हैं।
हम श्री जिनेन्द्र के चरण कमल, में सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्री उभय लक्ष्मी प्रदायक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

होके भोगों के दीवाने, चारों गतियों में भ्रमण किया।
ना प्यास आश की शांत हुई, इन्द्रिय विषयों में रमण किया।
जिन अर्चा कर जग के प्राणी, अतिशय लक्ष्मी शुभ पाते हैं।
हम श्री जिनेन्द्र के चरण कमल, में सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्री उभय लक्ष्मी प्रदायक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

ना उदर कभी भी भरता है, निशदिन भोजन की माँग करे।
जिह्वा व्यजंन में रमती है, संयम जीवन में सौख्य भरे।।
जिन अर्चा कर जग के प्राणी, अतिशय लक्ष्मी शुभ पाते हैं।
हम श्री जिनेन्द्र के चरण कमल, में सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्री उभय लक्ष्मी प्रदायक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

निज में अज्ञान अंधेरा है, बाहर के उजाले में भटके।
ना ध्यान किया निज आतम का, हम मोह कषायों में अटके।।
जिन अर्चा कर जग के प्राणी, अतिशय लक्ष्मी शुभ पाते हैं।
हम श्री जिनेन्द्र के चरण कमल, में सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्री उभय लक्ष्मी प्रदायक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

जीवन सुधारने का सोचा, पर कर्मों ने भटकाया है।
पुरुषार्थ प्रबल ना हो पाया, भव-भव में धोखा खाया है।।
जिन अर्चा कर जग के प्राणी, अतिशय लक्ष्मी शुभ पाते हैं।
हम श्री जिनेन्द्र के चरण कमल, में सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्री उभय लक्ष्मी प्रदायक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

है नित्य निरंजन अविनाशी, आतम का आदि या अंत नहीं।
पर्याय बदलती है पल-पल, मुक्ती फल बिन कोई पंथ नहीं।।

जिन अर्चा कर जग के प्राणी, अतिशय लक्ष्मी शुभ पाते हैं।
हम श्री जिनेन्द्र के चरण कमल, में सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्री उभय लक्ष्मी प्रदायक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

मन मोहक ये संसार रहा, हर वस्तू मोहित करती है।
निज आत्म ध्यान की शक्ति जगे, जो कर्म कालिमा हरती है।।
जिन अर्चा कर जग के प्राणी, अतिशय लक्ष्मी शुभ पाते हैं।
हम श्री जिनेन्द्र के चरण कमल, में सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्री उभय लक्ष्मी प्रदायक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – शांतीधारा कर मिले, मन में शांति अपार।
रत्नत्रय धारी विशद, करें आत्म उद्धार।।

।। शान्तये शांतिधारा।।

दोहा – पुष्पित पुष्पों से विशद, होवे गंध महान।
पुष्पांजलि के भाव से, करें जीव कल्याण।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

जयमाला

जिन भक्ती सद् भक्त को, करती मालामाल।
अत: श्री जिनराज की, गाते हैं जयमाल।।

(चौवोला छन्द)

सोलहकारण भव्य भावना, भाते जो सम्यक्त्वी जीव।
देव शास्त्र गुरु की भक्ती कर, पाते हैं वे पुण्य अतीव।।
तीर्थंकर प्रकृति के बन्धक, पंचकल्याणक पाते हैं।
गर्भोत्सव पर इन्द्र स्वर्ग के, रत्न वृष्टि करवाते हैं।।1।।
जन्मोत्सव पर क्षीर नीर से, मेरु पे न्हवन कराते हैं।
दीक्षा कल्याणक पर जिनेन्द्र की, जय जयकार लगाते हैं।।

कर्म घातिया नाश करें प्रभु, केवलज्ञान जगाते हैं।
श्रीयुत श्री जिन के पद आके, समवशरण बनवाते हैं।।2।।
धन कुबेर इंद्राज्ञा पाके, श्री का खोले निज भण्डार।
समवशरण रत्नों से निर्मित, रचता है वह अपरम्पार।।
श्री जिनेन्द्र के चरणों आके, लक्ष्मी सादर करे प्रणाम।
खुश होकर के भक्त जनों के, करती है जो पूरे काम।।3।।
मोर महालक्ष्मी का वाहन, चार हाथ की है धारी।
अनन्त चतुष्टय की प्रगटायक, गाई जो मंगलकारी।।
कमलाशन पर सोहे माता, लक्ष्मी प्रदायक जो गाई।
हुई कृपा जिस पर माता की, उसने ही लक्ष्मी पाई।।4।।
माँ के हैं आराध्य जिनेश्वर, जिन पद शीश झुकाते हैं।
इन्द्र चक्रवर्ती नारायण, सब जिनके गुण गाते हैं।।
कृपा प्राप्त कर माँ लक्ष्मी की, अतिशय वैभव पाते हैं।
कृपा करो हे मात! आपके, पावन हम गुण गाते।।5।।

दोहा- लक्ष्मी माँ के जीव जो, कृपा पात्र हो जाएँ।
सुख शांती सौभाग्य युत, विशद श्री को पाएँ।।

ॐ ह्री उभय लक्ष्मी प्रदायक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नाथ! आपकी कृपा से, होय श्री का लाभ।
उनका होता श्रेष्ठतम, जीवन ये अमिताभ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

प्रथम कोष्ठ

दोहा- उभय श्री धारी कहे, तीर्थंकर भगवान।
पुष्पांजलि करके यहाँ, करते हम गुणगान।।

।। इति मण्डस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

सोलहकारण भावना के अर्घ्य

(चौपाई)

दर्शविशुद्धी पावन जानो, भाओ हे! प्राणी यह मानो।
भव्य भावना जो यह भावे, वह तीर्थंकर पदवी पावे।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि भावना प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय सम्पन्न भावना भाई, शिव पद में जो कारण गाई।
भव्य भावना जो यह भावे, वह तीर्थंकर पदवी पावे।।2।।

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्न भावना प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग के धारी, बनते शिव पद के अधिकारी।
भव्य भावना जो यह भावे, वह तीर्थंकर पदवी पावे।।3।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अनतिचार व्रत शील उपावें, कर्म निर्जरा प्राणी पावें।
भव्य भावना जो यह भावे, वह तीर्थंकर पदवी पावे।।4।।

ॐ ह्रीं अनतिचार व्रत भावना प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो संवेग भावना धारें, मुक्ती पथ को आप सम्हारें।
भव्य भावना जो यह भावे, वह तीर्थंकर पदवी पावें।।5।।

ॐ ह्रीं संवेग भावना प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

त्याग शक्तिशः पायें ज्ञानी, वे हों वीतराग विज्ञानी।
भव्य भावना जो यह भावे, वह तीर्थंकर पदवी पावे।।6।।

ॐ ह्रीं शक्तिशः त्याग भावना प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शक्तीशः तप तपने वाले, शिव के राही कहे निराले।
भव्य भावना जो यह भावे, वह तीर्थंकर पदवी पावे।।7।।

ॐ ह्रीं शक्तिशः तप भावना प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

साधु समाधि भावना भाते, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाते।
भव्य भावना जो यह भावे, वह तीर्थंकर पदवी पावे।।8।।

ॐ ह्रीं साधु समाधी भावना प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वैय्यावृत्ती करके प्राणी, होते मोक्ष मार्ग के दानी।
भव्य भावना जो यह भावे, वह तीर्थंकर पदवी पावे।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति प्राप्त भावना श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अर्हद् भक्ति करें जो ज्ञानी, बनते वीतराग विज्ञानी।
भव्य भावना जो यह भावे, वह तीर्थंकर पदवी पावे।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हद भक्ति भावना प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो आचार्य भक्ति के धारी, शिव पाते बन के अनगारी।
भव्य भावना जो यह भावे, वह तीर्थंकर पदवी पावे।।11।।

ॐ ह्रीं आचार्य भक्ति भावना प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बहुश्रुत भक्ति करें जो ज्ञानी, वे हों वीतराग विज्ञानी।
भव्य भावना जो यह भावे, वह तीर्थंकर पदवी पावे।।12।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ति भावना प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रवचन भक्ती करें करावें, सम्यक् श्रुत धारी हो जावें।।
भव्य भावना जो यह भावे, वह तीर्थंकर पदवी पावे।।113।।

ॐ ह्रीं प्रवचन भक्ति भावना प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आवश्यक अपरिहार्य के धारी, कहलाते हैं शिवमगचारी।
भव्य भावना जो यह भावे, वह तीर्थंकर पदवी पावे।।14।।

ॐ ह्रीं आवश्यक अपरिहार्य भावना प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मार्ग प्रभावना करने वाले, जग में प्राणी रहे निराले।
भव्य भावना जो यह भावे, वह तीर्थंकर पदवी पावे।।15।।

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावना प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रवचन वत्सल्य भाव जगावें, मोक्षमार्ग प्राणी अपनावें।
भव्य भावना जो यह भावे, वह तीर्थंकर पदवी पावे।।16।।

ॐ ह्रीं प्रवचन वत्सल्य भावना प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सोलह कारण भावना भावें, वे नर जीवन सफल बनावें।
भव्य भावना जो यह भावें, वह तीर्थंकर पदवी पावें।।17।।

ॐ ह्रीं सोलहकारणभावना प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वितीय कोष्ठ

दोहा - दोष अठारह से रहित, होते हैं भगवान।
मुक्ति श्री पाएँ विशद, अतः करें गुणगान।।

।। द्वितियकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अठारह दोष रहित जिन के अर्घ्य

(छन्द मोतियादाम)

किए प्रभु 'क्षुधा' दोष का नाश, स्वयं जो कीन्हें ज्ञान प्रकाश।
प्रभू जी दोष अठारह हीन, सदा रहते हैं निज में लीन।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा दोष रहिताय उभयलक्ष्मीप्राप्त श्रीतीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू जी 'तृषा' दोष को नाश, किए शिवपुर में जिनवर वास।
प्रभू जी दोष अठारह हीन, सदा रहते हैं निज में लीन।।2।।

ॐ ह्रीं तृषा दोष रहिताय उभयलक्ष्मी प्राप्त श्रीतीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नशाए 'जन्म' दोष को आप, मिटाते हैं जग का संताप।
प्रभू जी दोष अठारह हीन, सदा रहते हैं निज में लीन।।3।।

ॐ ह्रीं जन्म दोष रहिताय उभयलक्ष्मीप्राप्त श्रीतीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'जरा' के नाशी श्री जिनेश, अजर कहलाते आप विशेष।
प्रभू जी दोष अठारह हीन, सदा रहते हैं निज में लीन।।4।।

ॐ ह्रीं जरा दोष रहिताय उभयलक्ष्मीप्राप्त श्रीतीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नशाएप्रभू जी 'विस्मय' दोष, आपका जीवन है निर्दोष।
प्रभू जी दोष अठारह हीन, सदा रहते हैं निज में लीन।।5।।

ॐ ह्रीं विषमय दोष रहिताय उभयलमीप्राप्त श्रीतीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'अरति' का करके पूर्ण विनाश, किए प्रभु मोक्ष महल में वास।
प्रभू जी दोष अठारह हीन, सदा रहते हैं निज में लीन।।6।।

ॐ ह्रीं अरति दोष रहिताय उभयलक्ष्मीप्राप्त श्रीतीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नशाए 'खेद' दोष को आप, बनाए जीवन को अभिताभ।
प्रभू जी दोष अठारह हीन, सदा रहते हैं निज में लीन।।7।।

ॐ ह्रीं खेद दोष रहिताय उभयलक्ष्मी प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'रोग' का कीन्हें काम तमाम, किए शिवपुर में जा विश्राम।
प्रभू जी दोष अठारह हीन, सदा रहते हैं निज में लीन।।8।।

ॐ ह्रीं रोग दोष रहिताय उभयलक्ष्मी प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'शोक' से रहित कहे जिनदेव, चरण में देव करें नित सेव।
प्रभू जी दोष अठारह हीन, सदा रहते हैं निज में लीन।।9।।

ॐ ह्रीं शोक दोष रहिताय उभयलक्ष्मी प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रहा ना 'मद' का नाम निशान, जगाए प्रभु जी केवलज्ञान।
प्रभू जी दोष अठारह हीन, सदा रहते हैं निज में लीन।।10।।

ॐ ह्रीं मद दोष रहिताय उभयलक्ष्मी प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'मोह' से रहित कहे जिनराज, कहाए तारण तरण जहाज।
प्रभू जी दोष अठारह हीन, सदा रहते हैं निज में लीन।।11।।

ॐ ह्रीं मोह दोष रहिताय उभयलक्ष्मी प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोष 'भय' के हैं प्रभु क्षयकार, आप हैं जग में मंगलकार।
प्रभू जी दोष अठारह हीन, सदा रहते हैं निज में लीन।।12।।

ॐ ह्रीं भय दोष रहिताय उभयलक्ष्मी प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू हैं 'निद्रा' दोष विहीन, कर्म को करने वाले क्षीण।
प्रभू जी दोष अठारह हीन, सदा रहते हैं निज में लीन।।13।।

ॐ ह्रीं निद्रा दोष रहिताय उभयलक्ष्मी प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नशाए प्रभू जी 'चिंता' दोष, बने हैं गुणानन्त के कोष।
प्रभू जी दोष अठारह हीन, सदा रहते हैं निज में लीन।।14।।

ॐ ह्रीं चिंता दोष रहिताय उभयलक्ष्मी प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रहे ना जिनके तन में 'स्वेद', कर्म का जो कीन्हें विच्छेद।
प्रभू जी दोष अठारह हीन, सदा रहते हैं निज में लीन।।15।।

ॐ ह्रीं स्वेद दोष रहिताय उभयलक्ष्मी प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नशाए दोष प्रभु जी 'राग', हुए हैं जग से पूर्ण विराग।
प्रभू जी दोष अठारह हीन, सदा रहते हैं निज में लीन।।16।।

ॐ ह्रीं राग दोष रहिताय उभयलक्ष्मी प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

किए प्रभु 'द्वेष' दोष का अन्त, कहाए अतः आप अर्हन्त।
प्रभू जी दोष अठारह हीन, सदा रहते हैं निज में लीन।।17।।

ॐ ह्रीं द्वेष दोष रहिताय उभयलक्ष्मी प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'मरण' का नाश किए भगवान, प्राप्त कीन्हें हैं शिव सोपान।
प्रभू जी दोष अठारह हीन, सदा रहते हैं निज में लीन।।18।।

ॐ ह्रीं मरण दोष रहिताय उभयलक्ष्मी प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोष अष्टादश कहे जिनेश, नशाए हैं प्रभु जी अवशेष।
प्रभू जी दोष अठारह हीन, सदा रहते निज में लीन।।19।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहिताय उभयलक्ष्मीप्राप्त श्रीतीर्थंकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृतीय कोष्ठ

दोहा– छियालिस पावन मूलगुण, पाते हैं भगवान।
पुष्पांजलि करते चरण, करने जिन गुणगान।।

तृतियकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

छियालिस मूलगुण के अर्घ्य

दश जन्म के अतिशय

(मोतियादाम छन्द)

स्वेद से रहित प्राप्त कर देह, रहें इस जग में निःसन्देह।
जन्म का अतिशय महति महान, प्राप्त करते हैं जिन भगवान।।1।।

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देह जो पाते हैं शुभकार, नहीं हो जिससे कभी निहार।
जन्म का अतिशय महति महान, प्राप्त करते हैं जिन भगवान।।2।।

ॐ ह्रीं निहार रहित सहजातिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रुधिर होता है जिनका श्वेत, प्रभू होते वात्सल्य समेत।
जन्म का अतिशय महति महान, प्राप्त करते हैं जिन भगवान।।3।।

ॐ ह्रीं श्वेत रक्त सहजातिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देह में समचतुष्क संस्थान, प्रभू को होवे सदा महान।
जन्म का अतिशय महति महान, प्राप्त करते हैं जिन भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं सम चतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

संहनन वज्र वृषभ नाराच, प्रभू पावें जानो यह साँच।
जन्म का अतिशय महति महान, प्राप्त करते हैं जिन भगवान।।5।।

ॐ ह्रीं वज्र वृषभ नाराच संहनन सहजातिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सुगंधित हो जिनवर की देह, विशद यह जानो नि: संदेह।
जन्म का अतिशय महति महान, प्राप्त करते हैं जिन भगवान।।6।।

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे 'लक्षण वसु अधिक हजार', करें सुर पद वन्दन शतबार।
जन्म का अतिशय महति महान, प्राप्त करते हैं जिन भगवान।।7।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट शुभ लक्षण सहजातिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू जी 'बलानन्त' को प्राप्त, जहाॅ में कहलाते हैं आप्त।
जन्म का अतिशय महति महान, प्राप्त करते हैं जिन भगवान।।9।।

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वचन हित मित होवें' मनहार, बोलते जग में मंगलकार।
जन्म का अतिशय महति महान, प्राप्त करते हैं जिन भगवान।।10।।

ॐ ह्रीं प्रिय हित वचन सहजातिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान के दस अतिशय

(मोतियादाम छन्द)

सुभिक्षता होय चार सौ कोष, चतुर्दिक में पावन निर्दोष।
ज्ञान का अतिशय ये मनहार, प्राप्त करते श्री जिन अपरम्पार।।11।।

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षयजातिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन में गमन करें जिनराज, दर्श कर होवें पूरे काज।
ज्ञान का अतिशय ये मनहार, प्राप्त करते जिन अपरम्पार।।12।।

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षयजातिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहित होते जिन अदया भाव, पार करते भव से जो नाव।
ज्ञान का अतिशय ये मनहार, प्राप्त करते श्री जिन अपरम्पार।।13।।

ॐ ह्रीं अदया भाव घातिक्षयजातिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें ना प्रभु जी कवलाहार, करें जो जीवों का उपकार।
ज्ञान का अतिशय ये मनहार, प्राप्त करते श्री जिन अपरम्पार।।14।।

ॐ ह्रीं कवलाहार रहित घातिक्षयजातिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू पर होवे न उपसर्ग, विशद जो पाते हैं अपवर्ग।
ज्ञान का अतिशय ये मनहार, प्राप्त करते श्री जिन अपरम्पार।।15।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्दिश हो जिनवर का दर्श, हृदय में हो जीवों के हर्ष।
ज्ञान का अतिशय ये मनहार, प्राप्त करते श्री जिन अपरम्पार।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू हैं सब विद्या के ईश, झुकाते पद में सुर नर शीश।
ज्ञान का अतिशय ये मनहार, प्राप्त करते श्री जिन अपरम्पार।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वर घातिक्षयजातिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू का छाया रहित शरीर, मिटाए जीवों की भव पीर।
ज्ञान का अतिशय ये मनहार, प्राप्त करते श्री जिन अपरम्पार।।18।।

ॐ ह्रीं छाया रहित अतिशय घातिक्षयजातिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रहित हों अक्षस्पन्द जिनेश, दर्श श्री जिन के रहे विशेष।
ज्ञान का अतिशय ये मनहार, प्राप्त करते श्री जिन अपरम्पार।।19।।

ॐ ह्रीं अक्षस्पन्द रहित घातिक्षयजातिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नहीं बढ़ते प्रभु के नख केश, हरण करते हैं जग का क्लेश।
ज्ञान का अतिशय ये मनहार, प्राप्त करते श्री जिन अपरम्पार।।20।।

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षयजातिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौदह देवकृत अतिशय

(चाल छन्द)

शुभ अर्ध मागधी वाणी, है जग जन की कल्याणी।
अतिशय देवोंकृत भाई, है जन-जन को सुखदायी।।21।।

ॐ ह्रीं अर्धमागधी भाषा देवोपनीतअतिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सब मैत्री भाव जगावें, ना बैर भाव दिखलावें।
अतिशय देवोंकृत भाई, है जन-जन को सुखदायी।।22।।

ॐ ह्रीं सर्व मैत्री भाव देवोपनीतअतिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फल फूल खिलें मनहारी, सब ऋतुओं के शुभकारी।
अतिशय देवोंकृत भाई, है जन-जन को सुखदायी।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि देवोपनीतअतिशय तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भू दर्पण सम हो जावे, आदर्श मयी कहलावे।
अतिशय देवोंकृत भाई, है जन-जन को सुखदायी।।24।।

ॐ ह्रीं आदर्श तल प्रतिमा रत्नमयी देवोपनीतातिशय धारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर वायु कुमार के आवें, जो शीतल पवन चलावें।
अतिशय देवोंकृत भाई, है जन-जन को सुखदायी।।25।।

ॐ ह्रीं सुंगधित विहरण मनुगत वायुत देवापनीतातिशय धारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भय क्लेशादिक नश जावे, जन मन आनन्द समावे।
अतिशय देवोंकृत भाई, है जन-जन को सुखदायी।।26।।

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवापनीतातिशय धारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सब कंटक भूमि हटावें, भूमी को स्वच्छ बनावें।
अतिशय देवोंकृत भाई, है जन-जन को सुखदायी।।27।।

ॐ ह्रीं आदर्श तल प्रतिमा रत्नमयी देवापनीतातिशय धारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो गंधोदक की वृष्टी, हो जाय हर्ष मय सृष्टी।
अतिशय देवोंकृत भाई, है जन-जन को सुखदायी।।28।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृत गंधोदक वृष्टि देवापनीतातिशय धारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहँ चरण कमल पड़ जावें, सुर पावन कमल रचावें।
अतिशय देवोंकृत भाई, है जन-जन को सुखदायी।।29।।

ॐ ह्रीं चरण कमल तल रचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हों निर्मल सर्व दिशाएँ, जिनदेव जहाँ पर जावें।
अतिशय देवोंकृत भाई, है जन-जन को सुखदायी।।30।।

ॐ ह्रीं सर्वदिशा निर्मलत्व देवोपनीतअतिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नभ में निर्मलता आए, महिमा जिनवर में पाए।
अतिशय देवोंकृत भाई, है जन-जन को सुखदायी।।31।।

ॐ ह्रीं गगन निर्मलत्व देवोपनीतअतिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आकाश में जय जयकारे, नर देव लगावें सारे।
अतिशय देवोंकृत भाई, है जन-जन को सुखदायी।।32।।

ॐ ह्रीं सर्वदिश जय-जयकार देवोपनीतअतिशयधारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर धर्म चक्र के धारी, चलते हैं मंगलकारी।
अतिशय देवोंकृत भाई, है जन-जन को सुखदायी।।33।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशय धारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वसु मंगल द्रव्य सजावें, जिन गुण गाके हर्षावें।
अतिशय देवोंकृत भाई, है जन-जन को सुखदायी।।34।।

ॐ ह्रीं अष्टमंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय धारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

देवों कृत चौदह जानो, अतिशय होते शुभमानो।
अतिशय देवोंकृत भाई, है जन-जन को सुखदायी।।35।।

ॐ ह्रीं चतु:त्रिंशत अतिशय धारक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चतुर्थ कोष्ठ

दोहा- कर्म घातिया नाशते, अनन्त चतुष्टयवान।
शिवपथ के राही विशद, होते हैं भगवान।।

।। चतुर्थकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि।

चार अनन्तचतुष्टय

जब ज्ञानावरण नशावें, तब केवलज्ञान जगावें।
हो अनन्तचतुष्टय धारी, बनते हैं शिव भर्तारी।।1।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान गुण प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु दर्शावरण नशावें, शुभ दर्शन गुण प्रगटावें।
हो अनन्तचतुष्टय धारी, बनते हैं शिव भर्तारी।2।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन गुण प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु मोह कर्म के नाशी, होते अनन्त सुख राशी।
हो अनन्तचतुष्टय धारी, बनते हैं शिव भर्तारी।।3।।

ॐ ह्रीं अनन्तसुख गुण प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जब अन्तराय को नाशें, फिर वीर्यानन्त प्रकाशें।
हो अनन्तचतुष्टय धारी, बनते हैं शिव भर्तारी।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य गुण प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु ज्ञान दर्श सुखकारी, होते अनन्तबल धारी।
हो अनन्तचतुष्टय धारी, बनते हैं शिव भर्तारी।।5।।

ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टययुक्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचम कोष्ठ

दोहा- प्रातिहार्य वसु के यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
इस भव के सुख भोगकर, पाएँ स्वपद अनर्घ्य।।

।। पञ्चमकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि।

अष्ट प्रातिहार्य

सोरठा

तरु अशोक सुखदाय, शोक निवारी जानिए।
प्रातिहार्य कहलाय, समवशरण की सभा में।।1।।

ॐ ह्रीं अशोकतरुप्रातिहार्य सहिताय श्री अर्हत् परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ सिंहासन होय, रत्न जड़ित सुंदर दिखे।
अधर तिष्ठते सोय, उदयाचल सों छवि दिखे।।2।।

ॐ ह्रीं सिंहासनप्रातिहार्य सहिताय श्री अर्हत् परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुष्पवृष्टि शुभ होय, भांति-भांति के कुसुम से।
महा भक्तिवश सोय, मिलकर करते देव गण।।3।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि प्रातिहार्य सहिताय श्री अर्हत् परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दिव्य ध्वनि सुखकार, सुने पाप क्षय हो भला।
पावैं सौख्य आपार, सुर नर पशु सब जगत के।।4।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिप्रातिहार्य सहिताय श्री अर्हत् परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौंसठ चँवर ढुरांय, प्रभु के आगे देवगण।
भक्ति सहित गुण गाँय, अतिशय महिमा प्रकट हो।।5।।

ॐ ह्रीं चामरमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री अर्हत् परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सप्त सुभव दर्शाय, भामण्डल निज कांति से।
महा ज्योति प्रगटाय, कोटि सूर्य फीके पड़ें।।6।।

ॐ ह्रीं भामण्डलप्रातिहार्य सहिताय श्री अर्हत् परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देव दुंदुभि नाद, करें देव मिलकर सुखद।
करें नहीं उन्माद, समवशरण में जाय के।।7।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभिप्रातिहार्य सहिताय श्री अर्हत् परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जड़ित सुनग तिय छत्र, तीन लोक के प्रभु की।
दर्शाते सर्वत्र, महिमाशाली है कहा।।8।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री अर्हत् परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीर्थंकर भगवान, प्रातिहार्य संयुत कहे।
करते हम गुणगान, जिन चरणों का भव से।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्य सहिताय श्री अर्हत् परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठं कोष्ठ

दोहा– बाह्य लक्ष्मी है विशद, समवशरण शुभकार।
जिसकी पूजा हम यहाँ, करते बारम्बार।।

।। षष्ठं कोष्ठयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि।। ।। चारों दिशा।।

समवशरण अर्घ्यावली

चार मानस्तंभ

(नरेन्द्र छन्द)

केवलज्ञान जगाते जब प्रभु, देव शरण में आते।
समवशरण की रचना करके, मानस्तंभ बनाते।।
मानस्तंभ में पूरव के हम, जिन बिम्बों को ध्याते।
पावन अर्घ्य चढ़ाकर के यह, सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिक् मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक, जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समवशरण में दक्षिण के शुभ, जो मानस्तंभ बताया।
उसमें जो जिन बिम्ब कहे हैं, जिसकी अतिशय माया।।
मानस्तंभ में दक्षिण के हम, जिनबिम्बों को ध्याते।
पावन अर्घ्य चढ़ाकर के यह, सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं दक्षिणदिक् मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक, जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पश्चिम दिश के मानस्तंभों, में जिन प्रतिमाएँ सोहें।
भव्य जीव जो दर्शन करते, उनके मन को मोहें।।
मानस्तंभ में पश्चिम के हम, जिनबिम्बों को ध्याते।
पावन अर्घ्य चढ़ाकर के यह, सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमदिक् मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक, जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समवशरण की उत्तर दिश में, मानस्तंभ है भाई।
वीतराग मय जिनबिम्बों की, महिमा अतिशय गाई।।
मानस्तंभ में उत्तर के हम, जिनबिम्बों को ध्याते।
पावन अर्घ्य चढ़ाकर के यह, सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तरदिक् मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक, जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अष्ट भूमियों के अर्घ्य

(जोगीराशा छन्द)

'प्रथम चैत्य' भूमी है पावन, जिसमें जिनगृह जानो।
सुर नर मुनि से पूज्य चैत्य हैं, अतिशयकारी मानो।।
समवशरण में श्री की पूजा, करके हर्ष मनाएँ।
सुख शांति सौभाग्य प्राप्त कर, मोक्ष महा पद पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिश चैत्य भूमि जिनालय संयुक्त-समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितिय भूमी रही 'खातिका', फूल खिले मनहारी।
सुर नर आके क्रीड़ा करते, शोभा है शुभकारी।।
समवशरण में श्री की पूजा, करके हर्ष मनाएँ।
सुख शांति सौभाग्य प्राप्त कर, मोक्ष महा पद पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं खातिका भूमि संयुक्त-समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'लता भूमि' तृतिय कहलाई, श्रेष्ठ लताओं वाली।
महिमा का ना पार है जिसका, शोभा दिखे निराली।।
समवशरण में श्री की पूजा, करके हर्ष मनाएँ।
सुख शांति सौभाग्य प्राप्त कर, मोक्ष महा पद पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं लता भूमि संयुक्त-समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है चतुर्थ 'उपवन भूमी' में, तरु 'अशोक' शुभकारी।
चारों दिश में जिन प्रतिमाएँ, सोहें अतिशयकारी ।।
समवशरण में श्री की पूजा, करके हर्ष मनाएँ।
सुख शांति सौभाग्य प्राप्त कर, मोक्ष महा पद पाएँ ।।8।।

ॐ ह्रीं उपवन भूमि मध्ये तरु अशोकवृक्ष परिसंयुक्त-समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन भूमी में 'सप्तछद', तरुवर है मनहारी।
हैं जिनबिम्ब चतुर्दिश पावन, अतिशय आभाकारी।।

समवशरण में श्री की पूजा, करके हर्ष मनाएँ।
सुख शांति सौभाग्य प्राप्त कर, मोक्ष महा पद पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं उपवन भूमि मध्ये सप्तछद वृक्ष परिसंयुक्त–समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चम्पक तरु' उपवन भूमी में, अतिशय शोभा पाएँ।
अतिशयकारी जिन प्रतिमाएँ, चउ दिश दर्श कराएँ।।
समवशरण में श्री की पूजा, करके हर्ष मनाएँ।
सुख शांति सौभाग्य प्राप्त कर, मोक्ष महा पद पाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं उपवन भूमि मध्ये चम्पक वृक्ष परिसंयुक्त–समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'आम्र वृक्ष' उपवन भूमी में, जिनबिम्बों युत गाये।
भव्य जीव जिन अर्चा करके, अतिशय पुण्य कमाए।।
समवशरण में श्री की पूजा, करके हर्ष मनाएँ।
सुख शांति सौभाग्य प्राप्त कर, मोक्ष महा पद पाएँ।।11।।

ॐ ह्रीं उपवन भूमि मध्ये आम्र वृक्ष परिसंयुक्त–समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दश चिह्नों युत 'ध्वज भूमी' में, पावन ध्वज लहराएँ।
आह्लादित करती जीवों को, मन में हर्ष बढ़ाएँ।।
समवशरण में श्री की पूजा, करके हर्ष मनाएँ।
सुख शांति सौभाग्य प्राप्त कर, मोक्ष महा पद पाएँ।।12।।

ॐ ह्रीं ध्वज भूमि मध्ये वृक्ष परिसंयुक्त–समवशरणस्ति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

"चार कल्प वृक्ष"

कल्पवृक्ष भू में सिद्धारथ, 'वृक्ष नमेरू' जानो।
वृक्ष मूल में सिद्धबिम्ब शुभ, अतिशयकारी मानो।।
समवशरण में श्री की पूजा, करके हर्ष मनाएँ।
सुख शांति सौभाग्य प्राप्त कर, मोक्ष महा पद पाएँ।।13।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्ष भूमि सिद्धार्थवृक्षपरिसंयुक्त–समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुरतरू भू में तरु सिद्धारथ, शुभ 'मन्दार' कहाए
सिद्धबिम्ब हैं मूल में तरु के, जिनवाणी यह गााए।।
समवशरण में श्री की पूजा, करके हर्ष मनाएँ।
सुख शांति सौभाग्य प्राप्त कर, मोक्ष महा पद पाएँ।।14।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्ष भूमि मंदार वृक्ष परिसंयुक्त–समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कल्प वृक्ष भू में सिद्धारथ, 'पारिजात' शुभकारी।
वृक्ष मूल में सिद्धबिम्ब की, शोभा है मनहारी।।
समवशरण में श्री की पूजा, करके हर्ष मनाएँ।
सुख शांति सौभाग्य प्राप्त कर, मोक्ष महा पद पाएँ।।15।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्ष भूमि पारिजात वृक्ष परिसंयुक्त–समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कल्प वृक्ष भू में सिद्धारथ, 'तरु सन्तानक' सोहे।
वृक्ष मूल में सिद्ध बिम्ब शुभ, जन–जन का मन मोहे।।
समवशरण में श्री की पूजा, करके हर्ष मनाएँ।
सुख शांति सौभाग्य प्राप्त कर, मोक्ष महा पद पाएँ।।16।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्ष भूमि संतानक वृक्ष परिसंयुक्त–समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चार भवन भूमि के अर्घ्य

(छन्द विष्णु पद)

भवन भूमि में श्रेष्ठ वीथिका, चारों दिश गाई।
सिद्धबिम्ब जिसमें शोभित हैं, अतिशय सुखदायी।।
प्रथम वीथिका में प्रतिमाएँ, सोहें मनहारी।
अष्ट द्रव्य से पूज रहे जो, हैं मंगलकारी।।17।।

ॐ ह्रीं भवन भूमि प्रथम वीथिका संयुक्त–समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेष्ठ वीथिका से सज्जित है, भवन भूमि प्यारी।
जिनबिम्बों से शोभित अनुपम, है महिमा भारी।।

द्वितिय वीथी में प्रतिमाएॅ, सोहें मनहारी।
अष्ट द्रव्य से पूज रहे जो, हैं मंगलकारी।।18।।

ॐ ह्रीं भवन भूमि द्वितीय वीथिका संयुक्त–समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

रही वीथिकाओं युत सप्तम, भूमी सुखदायी।
सिद्धबिम्ब चारों दिश सोहें, जिसमें हे भाई!।।
तृतिय वीथि में प्रतिमाएँ, सोहें मनहारी।
अष्ट द्रव्य से पूज रहे जो, हैं मंगलकारी।।19।।

ॐ ह्रीं भवन भूमि तृतीय वीथिका संयुक्त–समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेष्ठ वीथिकाएँ सप्तम भू, में शुभकर जानो।
सिद्धबिम्ब हैं चारों दिश में, पूज रहे मानों।।
चतुर्थ वीथिकर में प्रतिमााएॅ, सोहें मनहारी।
अष्ट द्रव्य से पूज रहे जो, हैं मंगलकारी।।20।।

ॐ ह्रीं भवन भूमि चतुर्थ वीथिका संयुक्त–समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री मण्डप भूमि

श्री मण्डप भूमी अष्टम है, अतिशय सुखदायी।
बारह कोठे बने हैं जिसमें, जीवों के भाई।।
मुनि आर्यिका देव देवियाँ, सद् श्रद्धाधारी।
अष्ट द्रव्य से जिन पद पूजें, अतिशय मनहारी।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीमण्डप भूमि संयुक्त समवशरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा : समवशरण में शोभते श्री जिनेन्द्र भगवान।
भक्त सभा में बैठकर करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय नमः।

सप्तं कोष्ठ

दोहा : गंध कुटी में शोभते, तीर्थंकर भगवान।
जिनका हम करते यहाँ, भाव सहित गुणगान।।

।। सप्तम कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

प्रथम कटनी पर चतुर्दिक् धर्मचक्र के अर्घ्य

(चौबोला छन्द)

समवशरण की प्रथम पीठ के, पूर्व दिशा में महति महान।
धर्मचक्र सर्वाण्ह यक्ष शुभ, सिर पर धारण करे प्रधान।।
तीर्थंकर के श्री विहार में, आगे चलता मंगलकार।
कोटि सूर्य की कांतीवाला, पूज रहे हम बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं प्रथम पीठ पूर्वदिक् समवशरणस्थित श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समवशरण की प्रथम पीठ पर, दक्षिण दिश में अतिशयकार।
धर्मचक्र सर्वाण्ह यक्ष शुभ, धारण करता है मनहार।।
तीर्थंकर के श्री विहार में, आगे चलता मंगलकार।
कोटि सूर्य की कांतीवाला, पूज रहे हम बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं प्रथम पीठ दक्षिणदिक् समवशरणस्थित श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

समवशरण की प्रथम पीठ पर, दिशा रही पश्चिम की ओर।
धर्मचक्र सर्वाण्ह ले, होता मन में भाव विभोर।।
तीर्थंकर के श्री विहार में, आगे चलता मंगलकार।
कोटि सूर्य की कांतीवाला, पूज रहे हम बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं प्रथम पीठ पश्चिमदिक् समवशरणस्थित श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समवशरण में प्रथम पीठ पर, उत्तर दिश में जानो आप।
धर्मचक्र सर्वाण्ह यक्ष ले, हरता है सबके संताप।।
तीर्थंकर के श्री विहार में, आगे चलता मंगलकार।
कोटि सूर्य की कांतीवाला, पूज रहे हम बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं प्रथम पीठ उत्तरदिक् समवशरणस्थित श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा– धर्म चक्र जिनदेव के, समवशरण में चार।
चतुर्दिशा में शोभते, पूज्य सुमंगलकार।।

ॐ ह्रीं प्रथम पीठ चतुर्दिश समवशरणस्थित श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(जोगीरासा छन्द)

द्वितीय पीठ पर आठ-आठ ध्वज, जिन महिमा दिखलाएँ।
वसु विध मंगल द्रव्य धूप घट, शोभा श्रेष्ठ बढ़ाएँ।।
फहराकर के उच्च ध्वजाएँ, यश गुण कीर्ति बढ़ावें।
जिन की पूजा करें भक्त जो, नित नव मंगल गावें।।5।।

ॐ ह्रीं द्वितीय पीठ समवशरणस्थित श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तृतीय पीठ पर समवशरण में, गंध कुटी मनहारी।
रत्न जड़ित है कांतिमान जो, अतिशय महिमाकारी।।
घंटा झालर मंगल द्रव्यों, से जो सोहे भाई।
जिन भक्तों ने जो कुछ चाहा, वह वस्तू ही पाई।।6।।

ॐ ह्रीं तृतीय पीठ समवशरणस्थित श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा- गंध कुटी में शोभते, तीर्थंकर भगवान।
जिनका करते आज हम, भाव सहित गुणगान।।

ॐ ह्रीं त्रय पीठ समवशरणस्थित श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

अष्टम कोष्ठ

दोहा- अड़तालिस ऋद्धी सहित, होते हैं भगवान।
भाव सहित जिनका यहाँ, करते हम गुणगान।।

।। अष्टमकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

48 ऋद्धियों के अर्घ्य

(सखी छन्द)

जिनवर छियालिस गुणँ पाएँ, जो 'केवलज्ञान' जगाएँ।
हैं ऋद्धि सिद्धि के धारी, मन वांछित फल दातारी।।1।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान बुद्धि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'अवधि ऋद्धि' को पाएँ, अपने विकार विनशाएँ।
हैं ऋद्धि सिद्धि के धारी, मन वांछित फल दातारी।।2।।

ॐ ह्रीं अविध बुद्धि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'परमावधि ऋद्धी' जानो, है पावन शिवकर मानो।
हैं ऋद्धि सिद्धि के धारी, मन वांछित फल दातारी।।3।।

ॐ ह्रीं परमावधि बुद्धि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सर्वावधि ऋद्धि' बताई, सब जीवों को सुखदाई।
हैं ऋद्धि सिद्धि के धारी, मन वांछित फल दातारी।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वावधि बुद्धि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अक्षय अनन्त गुण पावें, जो ध्यान से कर्म खिपावें।
हैं ऋद्धि सिद्धि के धारी, मन वांछित फल दातारी।।5।।

ॐ ह्रीं अवधि बुद्धि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'कोष्ठ ऋद्धि' प्रगटावें, श्रुत के धारी कहलावें।
हैं ऋद्धि सिद्धि के धारी, मन वांछित फल दातारी।।6।।

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है 'बीज बुद्धि' मनहारी, पावें सम्यकश्रुत धारी।
हैं ऋद्धि सिद्धि के धारी, मन वांछित फल दातारी।।7।।

ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अक्षर पद पूरण कारी, ऋद्धी वर पदानुसारी।
हैं ऋद्धि सिद्धि के धारी, मन वांछित फल दातारी।।8।।

ॐ ह्रीं पदानुसारणी बुद्धि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'संभिन्न श्रोतृत्व' शुभ जानो, ऋद्धी श्रुतकारी मानो।
हैं ऋद्धि सिद्धि के धारी, मन वांछित फल दातारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्रोतृत्व बुद्धि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ऋषि स्वयंबुद्ध शुभकारी, ऋद्धी प्रगटाएँ प्यारी।
हैं ऋद्धि सिद्धि के धारी, मन वांछित फल दातारी।।10।।

ॐ ह्रीं स्वयं बुद्ध ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ऋषि 'प्रत्येक बुद्धि' धर ज्ञानी, हैं जग-जन के कल्याणी।
हैं ऋद्धि सिद्धि के धारी, मन वांछित फल दातारी।।11।।

ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर तीर्थंकराय जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ऋषि 'बोधित बुद्ध' कहाएँ, जो मोक्ष मार्ग दर्शाएँ।
हैं ऋद्धि सिद्धि के धारी, मन वांछित फल दातारी।।12।।

ॐ ह्रीं बोधित बुद्ध ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर तीर्थंकराय जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मन:पर्यय ऋजुमति' ज्ञानी, ना जग में उनकी शानी।
हैं ऋद्धि सिद्धि के धारी, मन वांछित फल दातारी।।13।।

ॐ ह्रीं ऋजुमति बुद्धि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकराय तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मन:पर्यय विपुलमति' ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।
हैं ऋद्धि सिद्धि के धारी, मन वांछित फल दातारी।।14।।

ॐ ह्रीं विपुलमति बुद्धि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'महा लघु विद्या' के धारी, दश पूरव धर अनगारी।।
हैं ऋद्धि सिद्धि के धारी, मन वांछित फल दातारी।।15।।

ॐ ह्रीं लघु विद्या बुद्धि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ऋषि 'चौदह पूरव' पावें, पावन ऋद्धी प्रगटावें।
हैं ऋद्धि सिद्धि के धारी, मन वांछित फल दातारी।16।।

ॐ ह्रीं चौदह पूरव बुद्धि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चौपाई)

'ऋद्धि अष्टांग' निमित्त के धारी, ऋषिवर कहलाए अनगारी।
ऋद्धि सिद्धि धारी जो गाए, जिन पद में हम शीश झुकाए।।17।।

ॐ ह्रीं अष्टांग निमित्त ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

उच्च गगन में हो रवि चन्दा, प्राप्ति विक्रिया ऋद्धि मुनिन्दा।
ऋद्धि सिद्धि धारी जो गाए, जिन पद में हम शीश झुकाए।।18।।

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मोक्ष पथी विद्या' के धारी, आत्मानुभूती रत अनगारी।
ऋद्धि सिद्धि धारी जो गाए, जिन पद में हम शीश झुकाए।।19।।

ॐ ह्रीं विद्या ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चारण ऋद्धी धारी' गाए, गगन गमन की शक्ति जगाए
ऋद्धि सिद्धि धारी जो गाए, जिन पद में हम शीश झुकाए।।20।।

ॐ ह्रीं चारण ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि' के स्वामी, होते हैं मुक्ती पथगामी।
ऋद्धि सिद्धि धारी जो गाए, जिन पद में हम शीश झुकाए।।21।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञा श्रमण बुद्धि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गमन विहारी ऋद्धी' पावें, भविजन जिनकी महिमा गावें।
ऋद्धि सिद्धि धारी जो गाए, जिन पद में हम शीश झुकाए।।22।।

ॐ ह्रीं आकाश गमन ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'आषीर्विष' ऋद्धीधर ज्ञानी, जग में गाये दया प्रधानी।
ऋद्धि सिद्धि धारी जो गाए, जिन पद में हम शीश झुकाए।।23।।

ॐ ह्रीं आषीर्विष ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दृष्टी विष ऋद्धी' मुनि पावें, क्रोध दृष्टि जो नहीं दिखावें।
ऋद्धि सिद्धि धारी जो गाए, जिन पद में हम शीश झुकाए।।24।।

ॐ ह्रीं दृष्टिविष ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उग्र सुतप ऋद्धी' के धारी, कर्म निर्जरा करते भारी।
ऋद्धि सिद्धि धारी जो गाए, जिन पद में हम शीश झुकाए।।25।।

ॐ ह्रीं उग्र सुतप ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दीप्त सुतप ऋद्धी' जो पावें, तप कर तन का तेज बढ़ावें।
ऋद्धि सिद्धि धारी जो गाए, जिन पद हम में शीश झुकाए।।26।।

ॐ ह्रीं दीप्त सुतप ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'तप्त सुतप ऋद्धी' के धारी, करें निहार ना हों आहारी।
ऋद्धि सिद्धि धारी जो गाए, जिन पद में हम शीश झुकाए।।27।।

ॐ ह्रीं तप्त सुतप ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'महा सुतप ऋद्धी' को पावें, कर्म नाशकर शिव पुर जावें।
ऋद्धि सिद्धि धारी जो गाए, जिन पद में हम शीश झुकाए।।28।।

ॐ ह्रीं महा सुतप ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'घोर सुतप ऋद्धी' प्रगटाते, निज अनुभव से ध्यान लगाते।
ऋद्धि सिद्धि धारी जो गाए, जिन पद में हम शीश झुकाए।।29।।

ॐ ह्रीं घोर सुतप ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'घोर गुणाणं' ऋद्धीधारी, जग में गाए हैं अविकारी।
ऋद्धि सिद्धि धारी जो गाए, जिन पद में हम शीश झुकाए।।30।।

ॐ ह्रीं घोरगुण ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'घोर पराक्रम' पाने वाले, ऋषिवर जग में रहे निराले।
ऋद्धि सिद्धि धारी जो गाए, जिन पद में हम शीश झुकाए।।31।।

ॐ ह्रीं घोर पराक्रम ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धी' धारी, रोग शोक अज्ञान निवारी।
ऋद्धि सिद्धि धारी जो गाए, जिन पद में हम शीश झुकाए।।32।।

ॐ ह्रीं अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(मोतियादाम छन्द)

'ऋद्धि सर्वौषधि' धार महान, करें जो जीवों का कल्याण।
प्राप्त कर ऋद्धी सिद्धि अनूप, प्रकाशित करते निज स्वरूप।।33।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'ऋद्धि क्ष्वेलौषधि' कही प्रधान, ऋषी पाके पावें निर्वाण।
प्राप्त कर ऋद्धी सिद्धि अनूप, प्रकाशित करते निज स्वरूप।।34।।

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'ऋद्धि पावन जल्लौषधि' धार, बनें शिवपथ गामी अनगार।
प्राप्त कर ऋद्धी सिद्धि अनूप, प्रकाशित करते निज स्वरूप।।35।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहाए 'ऋषि विप्रौषधि' वान, प्राप्त जो करते शिव सोपान।
प्राप्त कर ऋद्धी सिद्धि अनूप, प्रकाशित करते निज स्वरूप।।36।।

ॐ ह्रीं विप्रौषधि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'ऋद्धि सर्वौषधि' धारे आप, ध्यान कर काटें सारे पाप।
प्राप्त कर ऋद्धी सिद्धि अनूप, प्रकाशित करते निज स्वरूप।।37।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहे 'मन बल धारी' अनगार, करें श्रुत का चिंतन शुभकार।
प्राप्त कर ऋद्धी सिद्धि अनूप, प्रकाशित करते निज स्वरूप।।38।।

ॐ ह्रीं मन बल ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वचन बल' ऋद्धीधार प्रधान, ऋषी श्रुत उच्चारें गुणवान।
प्राप्त कर ऋद्धी सिद्धि अनूप, प्रकाशित करते निज स्वरूप।।39।।

ॐ ह्रीं वचन बल ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'काय बल ऋद्धी' धर अनगार, सर्पि रस युत पावें आहार।
प्राप्त कर ऋद्धी सिद्धि अनूप, प्रकाशित करते निज स्वरूप।।40।।

ॐ ह्रीं काय बल ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सर्पि स्रावी रस ऋद्धी' धार, सर्पि रस युत पावें आहार।
प्राप्त कर ऋद्धी सिद्धि अनूप, प्रकाशित करते निज स्वरूप।।41।।

ॐ ह्रीं सर्पिस्रावी रस ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मधू-स्रावी रस ऋद्धी' पाय, मिष्ट कर में भोजन हो जाए।
प्राप्त कर ऋद्धी सिद्धि अनूप, प्रकाशित करते हैं निज स्वरूप।।42।।

ॐ ह्रीं मधु स्रावी रस ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'ऋद्धि अमृत स्रावी' अनगार, करें अमृत सम रूक्षाहार।
प्राप्त कर ऋद्धी सिद्धि अनूप, प्रकाशित करते हैं निज स्वरूप।।43।।

ॐ ह्रीं अमृत स्रावी ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'ऋद्धि अक्षीण महानस' वान, करें जग जीवों का कल्याण।
प्राप्त कर ऋद्धी सिद्धि अनूप, प्रकाशित करते हैं निज स्वरूप।।44।।

ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

करें जिस गृह में मुनि आहार, जीमते वहाँ सर्व नर नार।
प्राप्त कर ऋद्धी सिद्धि अनूप, प्रकाशित करते हैं निज स्वरूप।।45।।

ॐ ह्रीं अक्षीण महालय ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ऋद्धि धारी मुनिवर 'वर्धमान', शोभते जग में चन्द्र समान।
बनें शिवपथ के राही आप, करें जग प्राणी जिनका जाप।।46।।

ॐ ह्रीं वर्धमान ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहे 'सिद्धायतन' जगत प्रधान, ध्यान कर पावें ऋद्धि महान।।
बनें शिवपथ के राही आप, करें जग प्राणी जिनका जाप।।47।।

ॐ ह्रीं सिद्धायतन ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

णमो भगवान महति महावीर, वर्धमान विशद ऋद्धि गुण धीर।
बनें शिवपथ के राही आप, करें जग प्राणी जिनका जाप।।48।।

ॐ ह्रीं महतिमहावीर वर्धमान ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ऋद्धि सिद्धी धारी ऋषिराज, कहाए तारण तरण जहाज।
अर्चना करके वैभववान, होंय नर पावें शिव सोपान।।49।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि प्राप्त श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

जाप : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं व्लूं ऐं महालक्ष्मै नमः।

जयमाला

दोहा- उभय लक्ष्मी प्राप्त जिन, हे त्रैलोकी नाथ!।
जयमाला गाते प्रभो!, झुका चरण में माथ।।

(नरेन्द्र छन्द)

पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते।
देव स्वर्ग से जिनके चरणों, भक्ति भाव से आते।।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष यह, पंचकल्याणक धारी।
मोक्ष मार्ग के नेता होते, जग में मंगलकारी।।1।।
स्वयं बुद्ध होते हैं जिनवर, जो वैराग्य जगाते।
संयम धारण करके निश्चल, अतिशय ध्यान लगाते।।
कर्म निर्जरा करने वाले, कर्म घातिया नाशी।
अनन्तचतुष्टय पाते पावन, केवलज्ञान प्रकाशी।।2।।
सोलह कारण भव्य भावना, पूर्व भवों में भावें।
जिसके फल से तीर्थंकर शुभ, अतिशय पदवी पावें।।
जन्म ज्ञान के अतिशय दश दश, के होते अधिकारी।
चौदह देवोंकृत अतिशय भी, पावें विस्मयकारी।।3।।
अनन्तचतुष्टय प्रातिहार्य वसु, तीर्थंकर जिन पावें।
काल अनादी दोष अठारह, क्षण में आप नशावें।।
समवशरण की रचना करके, धन कुबेर हर्षावे।
स्वर्ग लोक का सारा वैभव, आके सभी लगावे।।4।।
चतुर्दिशा में मानस्तंभों, की रचना शुभकारी।
अष्ट भूमियों की रचना सुर, करता मंगलकारी।।
गंधकुटी के ऊपर श्री जिन, अतिशय शोभा पावें।
ॐ कार मय दिव्य देशना, सबको आप सुनावें।।5।।
प्रभु सौ योजन में सुभिक्षता, लक्ष्मी देकर करते।
दीन हीन जो शरण में आते, उनके संकट हरते।।

अनन्तचतुष्टय ज्ञान लक्ष्मी, अतरंग कहलाए।
समवशरण है बाह्य लक्ष्मी, जो तीर्थंकर पाए।।6।।
अत: अकृत्रिम जिनबिम्बों के, आर्श्व पार्श्व में भाई।
श्री देवी श्रुत देवी के भी, बिम्ब बने सुखदायी।।
तीर्थंकर के साथ लक्ष्मी, सरस्वती को ध्याये।
मुक्ती पथ का राही ज्ञानी, 'विशद' लक्ष्मी पाए।।7।।

दोहा– लक्ष्मी की अर्चा किए, लक्ष्मी हो सम्प्राप्त।
इस जग के सुख भोग कर, बने अन्त में आप्त।।

ॐ ह्री उभय लक्ष्मी प्रदायक श्री तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा– लक्ष्मी प्राप्ती के लिए, जिनवर का गुणगान।
'विशद' भाव से जो करें, पावे शिव सोपान।।

।। इत्याशीर्वादः।।

आरती

समवशरण लक्ष्मी की, करते आरती मंगलकारी।
घृत के दीप जलाकर लाये, जिनवर के दरबार।।
हो जिनवर.... हम सब उतारे मंगल आरती।
पूर्व भवों में सोलहकारण, भव्य भावना भावें।
पुण्य योग से तीर्थंकर पद, का शुभ बंध उपावें।।टेक।।
हो जिनवर....

जन्म ज्ञान के दश दश अतिशय, पाते हैं जिन स्वामी।
चौदह देवोंकृत अतिशय शुभ, प्रगटावें जगनामी।।
हो जिनवर....

अनन्त चतुष्टय पाने वाले, प्रातिहार्य के धारी।
समवशरण में शोभा पावें, तीर्थंकर अविकारी।।
हो जिनवर....

अष्ट भूमियाँ समवशरण में, गंधकुटी शुभकारी।
कमलाशन पर अधर प्रभुजी, शोभें मंगलकारी।।
हो जिनवर....

समवशरण है बाह्य लक्ष्मी, अंतरज्ञान कहाये।
दर्श ज्ञान चारित्र सुतपधर, 'विशद' ज्ञान प्रगटाये।।
हो जिनवर....

ऋषि मुनि यति अनगार सुतप कर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पावें।
भव्य जीव जिन अर्चा करके, निज सौभाग्य जगावें।।
हो जिनवर....

विशद लक्ष्मी यह विधान कर, भव्य जीव शुभकारी।
मनवांछित शुभ लक्ष्मी पावें, जिन के बने पुजारी।।
हो जिनवर....

***

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत् शिष्य श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्ते अलवर जिलान्तर्गत तिजारा नाम नगरे निर्वाण सम्वत् 2543 वि.सं. 2074 पौष मासे कृष्ण पक्षे अष्टमी रविवारसरे श्री लक्ष्मी प्राप्ति विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

***